“मैं वही हूँ जो मैं हूँ” – परमेश्वर का स्वभाव समझना

जब मूसा ने परमेश्वर से पूछा कि आप अपना नाम प्रकट करें (निर्गमन 3:13), तो वे शायद किसी विशिष्ट नाम की आशा कर रहे थे – जैसा उस समय के अनेक देवताओं जैसे बाअल या अश्तोरथ के नाम थे। प्राचीन संस्कृतियों में नामों में अर्थ, पहचान और देवता की भूमिका या शक्ति का प्रतिबिंब होता था।

परंतु परमेश्वर की प्रतिक्रिया किसी भी अन्य की तरह नहीं थी:

“परमेश्वर ने मूसा से कहा: ‘मैं वही हूँ जो मैं हूँ।’ और उन्होंने कहा: ‘यहे इज़राइल के लोगों से कहो: “मैं” ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’” (निर्गमन 3:14)

इसका अर्थ आधुनिक अनुवादों में अक्सर इस तरह बताया गया है:

“मैं वही बनूंगा जो मैं बनूंगा।”

यह उस बात की ओर संकेत करता है कि परमेश्वर का स्वरूप शाश्वत है, स्वयं‑स्थित है, और अपरिवर्तनीय है। हिब्रू वाक्यांश “Ehyeh Asher Ehyeh” यह दर्शाता है कि परमेश्वर को मानवीय श्रेणियों

“मैं वही हूँ जो मैं हूँ” – परमेश्वर का स्वभाव समझना

द्वारा सीमित नहीं किया जा सकता। वह स्वयं अस्तित्व है – स्थिर, विश्वसनीय और पूरी तरह प्रभुत्वशाली।

परमेश्वर की क्रमागत प्रकटता

उस क्षण परमेश्वर ने मूसा को अपनी दिव्य पहचान की झलक दी — लेकिन यह पूरी प्रकटता की शुरुआत थी। बाद में (निर्गमन 6:2‑3) कहा गया:

“मैं यहोवा हूँ। मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब के सामने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में प्रकट हुआ; परन्तु अपने
नाम — यहोवा — से मैं उन्हें पूरी तरह नहीं जान पाया।”

यहाँ परमेश्वर यहोवा (YHWH) नाम से स्वयं को परिचित कराते हैं — जो “मैं हूँ” क्रिया से सम्बन्धित है। यह एक ऐसा परमेश्वर है जो संबंध‑मूलक, वचन‑बद्ध और विश्वसनीय है। जहाँ पैत्रियों ने उनकी शक्ति अनुभव की थी, वहाँ अब इस्राएल को उनकी मुक्ति और वचन की पूर्णता यहोवा द्वारा अनुभव होगी।

संदर्भ में परमेश्वर के नाम

शास्त्र में परमेश्वर ने ऐसे नामों द्वारा अपना स्वभाव दिखाया

“मैं वही हूँ जो मैं हूँ” – परमेश्वर का स्वभाव समझना

है, जो विशेष‑विशेष परिस्थितियों में उनके लोगों की ज़रूरतों को छूते हैं। इन्हें अक्सर यहोवा के संयुक्त नाम कहा जाता है:

यहोवा यिरेह – “परमेश्वर देखेंगे” (उत्पत्ति 22:14)
यहोवा निस्सी – “परमेश्वर मेरा ध्वज है” (निर्गमन 17:15)
यहोवा शैलोम – “परमेश्वर शांति है” (न्यायियों 6:24)
यहोवा रोही – “परमेश्वर मेरा रखवाला है” (भजन 23:1)
यहोवा राफा – “परमेश्वर जो चंगा करता है” (निर्गमन 15:26)

ये नाम यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर का चरित्र सक्रिय है और वह अपने लोगों की ज़रूरतों में उपस्थित है—चाहे वह युद्ध हो, कमी हो, भय हो या दुःख हो। हर नाम उनकी देखभाल, पवित्रता और निकटता के एक‑एक पहलू को प्रकाशित करता है।

परमेश्वर की सर्वोच्च प्रकटता: यीशु

परमेश्वर ने अपने आप को जिस सबसे बड़े नाम से प्रकट किया, वह है यीशु मसीह।

“तुम उसका नाम ‘यीशु’ रखोगे; क्योंकि वही अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।” (मत्ती 1:21)

“मैं वही हूँ जो मैं हूँ” – परमेश्वर का स्वभाव समझना

नाम ‘यीशु’ (हिब्रू में ‘येशुआ’) का अर्थ है “यहोवा बचाता है”। मसीह में परमेश्वर पूरी तरहस्वरूप में स्वयं को प्रकट करते हैं—संसार के उद्धारकर्ता के रूप में।

यीशु ने स्वयं अपनी दिव्यता की पुष्टि करते हुए “मैं हूँ” वाक्यांश अनेक बार प्रयोग किया:

“मैं जीवन का अन्न हूँ।” (यूहन्ना 6:35)
“मैं जगत का प्रकाश हूँ।” (यूहन्ना 8:12)
“अब्राहम के होने से पूर्व, मैं हूँ।” (यूहन्ना 8:58)

इन कथनों में उन्होंने मूसा को कही गयी परमेश्वर की “मैं हूँ” घोषणा के स्वर को आत्मसात किया और यह दर्शाया कि यीशु वही यहोवा हैं—मांस में हमारे बीच उपस्थित परमेश्वर (इम्मानुएल)।

हमारे लिए इसका क्या अर्थ है?

परमेश्वर को किसी एक भूमिका या शीर्षक तक सीमित नहीं किया जा सकता। वह “मैं वही बनूंगा जो मैं बनूंगा” हैं। जिसका अर्थ है:

जब आप अभाव में हों — तो वह आपका प्रदाता है।
जब आप दुःख में हों — तो वह आपका चिकित्सक है।
जब आप युद्ध में हों — तो वह आपका ध्वज है।
जब आप पाप में हों — तो वह आपका उद्धारकर्ता है।

“मैं वही हूँ जो मैं हूँ” – परमेश्वर का स्वभाव समझना

चाहे आप पर्वत पर हों, घाटी में हों, रेगिस्तान में हों या पाप में खोए हुए हों — वह आपको प्रकट कर सकते हैं। आपको परमेश्वर को अपने जीवन के केवल एक क्षेत्र तक सीमित रखने की जरूरत नहीं है। वह हर जगह और हर चीज में उपस्थित हैं।

क्या आपने “मैं हूँ” को जाना है?

क्या आपने व्यक्तिगत रूप से उस परमेश्वर को जाना है जिसने खुद को उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट किया?

“क्योंकि पाप का वेतन मृत्यु है; परन्तु परमेश्वर की देन
अनन्त जीवन है हमारे प्रभु मसीह यीशु में।” (रोमियों 6:23)

जब आप यीशु में विश्वास करते हैं, तो आपके पाप क्षम हो जाते हैं और आप अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं। आप मृत्यु से जीवन में, निर्णय से कृपा में परिवर्तित होते हैं।

ये अंतिम दिन हैं। देर न करें। आपका क्या लाभ होगा यदि आप सब कुछ जीत लें और फिर भी मसीह के पुनरागमन पर पीछे रह जाएँ?

यदि आप तैयार हैं कि यीशु को अपने जीवन में स्वीकार करें, तो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

“मैं वही हूँ जो मैं हूँ” – परमेश्वर का स्वभाव समझना

नीचे दिए गए संपर्क सूचनाओं से हमसे जुड़ें। उद्धार एक मुफ्त उपहार है।

धन्य रहें — और कृपया इस संदेश को दूसरों के साथ साझा करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp